मनोज
चित्र कथा
मूल्य 4.00
आग का तूफान
fenzz
डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
राम-रहीम
मनोज कॉमिक्स
TRISHUL COMICS

आग का तूफान

लेखक :- बिमल चटर्जी. चित्रांकन :- त्रिशूल कॉमिको आर्ट.

आप मनोज कॉमिक्स के पिछले अंकों "अपने देश का गद्दार", "हवा के बेटे", "बम के गोले" और "तिरंगा नहीं झुकेगा" में पढ़ चुके हैं कि राम अपने दोस्त रहीम की बहन की शादी में शरीक होने पाकिस्तान जाता है और वहां उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ता है। पाकिस्तानी हुकूमत उसे पकड़ने के लिये पागल हो उठती है, क्योंकि राम के पिता कर्नल राघव की देख-रेख में भारत की सीमा पर स्थित एक प्रयोगशाला में जबरदस्त आविष्कार किया जा रहा था। उसी आविष्कार के विषय में पाकिस्तानी सरकार कर्नल राघव से जानना चाहती थी और कर्नल राघव पर दबाव डालने के लिये वह राम को यानी उनके बेटे को माध्यम बनाना चाहती थी, लेकिन राम, रहीम के पिता की मदद से रहीम के साथ पाकिस्तानी गुप्तचरों के जाल से निकल गया और दोनों इधर-उधर छुपते-छुपाते फिरते रहे, लेकिन अन्त में उन दोनों को भी पकड़ लिया गया और मेजर आसिफ के साथ, जिन्हें पहले ही बंदी बना लिया गया था, कैद कर दिया गया। लेकिन यहां भी राम पाकिस्तानी हुकूमत के लिये आफत का परकाला सिद्ध हुआ और मेजर आसिफ व रहीम सहित भाग निकला। और उन्होंने शहर से दूर एक सुरंग में पनाह ली। वहां राम ने यह निश्चय किया कि वह रहीम की मां को उनकी कोठी से निकालकर लायेगा, उसके बाद वे पाकिस्तान छोड़ देंगे। यह निश्चय कर राम एक रात अकेला उस सुरंग से चला और भिखारी के वेश में मेजर आसिफ की कोठी पर पहुंच गया। वहां गुप्तचरों का सख्त पहरा था, परन्तु राम ने कोठी के पिछवाड़े में एक गुप्तचर को बेहोश करके कोठी के भीतर घुसने का रास्ता बना लिया। आगे क्या होता है, यह प्रस्तुत चित्रकथा में पढ़ें :–

आक्-थू !

कमीने, शैतान! खुदा तुझे गारत करे। एक मेजर की पत्नी से तुझे ऐसी भोंडी बातें करते हुए शर्म नहीं आती?
तू... तूने मेरे मुंह पर थूका... तेरी यह जुर्रत...!

मैं हजार बार तुझ पर थूकूंगी कुत्ते ले!
आक्-थू!

इस अपमान से इंस्पेक्टर खुर्शीद आलम के सब्र की तमाम सीमाएं बांध गईं और –
तो ले चुड़ैल, तुझे भी अब दुनिया की कोई शक्ति नहीं बचा सकती।

आ-ई-ई-ई
घुप्प!

आह ! या अल्लाह!

खुर्शीद आलम ने क्रोध में अंधे होकर एक के बाद एक चाकू से कई वार आबिदा बेगम के शरीर के विभिन्न हिस्सों पर किये और आबिदा बेगम अल्लाह का नाम लेती हुई उसी को प्यारी हो गई।
या खुदा! यह मुझसे क्या गजब हो गया? क्रोध में आकर मैंने तो इसे मार ही डाला। अब मैं ब्रिगेडियर खान और कल्ले खां को क्या जवाब दूंगा?

तभी एक विचार इंस्पेक्टर के दिमाग में कौंधा।
क्यों न मैं ऐसे प्रमाण मिटा दूं जिनसे यह साबित हो कि खून मेरे हाथों हुआ है। यह खून किसी दूसरे के सर भी तो मढ़ा जा सकता है। हां, मैं ऐसा ही करता हूं।
सोचकर खुर्शीद कमरे के साथ ही अटैच्ड बाथरूम में चाकू धोने घुस गया।
ठीक तभी राम धीरे से दरवाजा खोलकर भीतर प्रविष्ट हुआ, लेकिन भीतर का दृश्य देखते ही–
हे ईश्वर, नहीं! आंटी!
अगले ही पल–
आह! आंटी, यह तुम्हें क्या हो गया? किस बेरहम ने तुम्हारी यह हालत की? बोलो आंटी, कौन है वह शैतान? मैं उसकी बोटी-बोटी नोच डालूंगा। हू-हू-हू-हू!
राम के रोने की आवाज सुनकर इंस्पेक्टर खुर्शीद आलम तुरन्त बाथरूम से निकला।
ऐ, कौन हो तुम और तुम्हें यहां किसने आने दिया?
ओह! तो यह है आंटी का कातिल?

कुत्ते, तेरे प्रश्न का उत्तर में बाद में दूंगा, पहले तू यह बता कि इस औरत का कत्ल किसने किया है?
मैं क्या जानूं! लेकिन तुम्हें इससे क्या मतलब? क्या लगती है यह तुम्हारी?

राम क्रोध से पागल हो उठा–
यह मेरी मां लगती थी कुत्ते। तो तू यह नहीं जानता कि इसको किसने मारा, जबकि तेरे हाथ में थमा रक्तरंजित चाकू चीख-चीखकर मुझे बता रहा है कि यह खून इससे हुआ है और तुमने किया है...
...मैं तुझे भी जिन्दा नहीं छोड़ूंगा हरामी!

और इससे पहले कि इंस्पेक्टर खुर्शीद आलम संभल पाता, राम ने बिजली की-सी फुर्ती के साथ अपने वस्त्रों से रिवॉल्वर निकाला और–
धांय-धांय-धांय
आई-ई-ई-
उसने अपना पूरा रिवॉल्वर इंस्पेक्टर पर खाली कर दिया।

यह शैतान तो खत्म हो गया, लेकिन मैं रहीम और उसके डैडी को क्या जवाब दूंगा? हे ईश्वर, तू ही मुझे कोई रास्ता सुझा।

तभी–
ठक्-ठक् ठक्
ओह! कोई आ रहा है। मुझे यहां से तुरन्त निकल जाना चाहिये।

अगले ही पल–

फिर उसने बंगले से बाहर निकलने...

...और जीप तक पहुंचने में ज्यादा देर नहीं लगाई।

और-
रहीम और उसके डैडी आंटी की मौत का सदमा शायद ही बर्दाश्त कर पायें। अब तो उन्हें थोड़ा-सा दिलासा देने का एक ही उपाय है कि किसी तरह उनकी बेटी और दामाद को सुरक्षित उन तक पहुंचाया जाये।

उधर मेजर आसिफ के बंगले की निगरानी करने वालों में से तीन खुफिया जासूस फायरों की आवाज सुनते ही दौड़े हुए उस कमरे में पहुंचे, जहां आबिदा बेगम कैद थी, लेकिन वहां पहुंचते ही उनके पैरों तले से धरती निकल गई।
या खुदा! इंस्पेक्टर खुर्शीद आलम का खून कर दिया गया!
और बेगम आबिदा भी मृत है!

कौन कर सकता है इनका खून?
कुछ कहा नहीं जा सकता, लेकिन हमें तुरन्त इस घटना की खबर चीफ को कर देनी चाहिए।
ठीक कहते हो। आओ, पहले फोन ही कर आयें।

तीनों तुरन्त पास वाले कमरे में पहुंचे, जहां फोन रखा था और-
कौन कर सकता है इंस्पेक्टर खुर्शीद आलम का कत्ल?
कौन आया होगा इतनी सख्त निगरानी के बावजूद भी भीतर?

उस समय फन्ने खां अपने कुछ मातहतों के साथ मेजर आसिफ के दामाद की कोठी में मौजूद था।
आखिर आप लोग बताते क्यों नहीं कि हमारा कसूर क्या है और बिना वजह हमें परेशान क्यों किया जा रहा है?
कहा ना, समय आने पर तुम्हें सबकुछ बता दिया जायेगा।

तभी-
ट्रिन-ट्रिन-ट्रिन
ठहरो, मैं देखता हूं।

हैलो, फन्ने खां हियर!

सर, मैं नम्बर जीरो नाइन बोल रहा हूं। इंस्पेक्टर खुर्शीद आलम और मेजर आसिफ की पत्नी का किसी ने खून कर दिया है।

क्या बकते हो?

कैसे हुआ यह सब ? तुम लोगों की निगरानी के बावजूद भी कोई कैसे भीतर प्रविष्ट हुआ ?
सर, कोठी के मुख्य द्वार से तो कोई भीतर नहीं घुसा, क्योंकि मैं मुख्य द्वार की ही निगरानी कर रहा था...

...मुझे संदेह है कि खूनी बंगले के पिछवाड़े से भीतर दाखिल हुआ है...
...लेकिन सर, हमें आश्चर्य इस बात का है कि यदि बंगले के भीतर प्रविष्ट होने वाले हमारे शिकार राम-रहीम और मेजर आसिफ ही थे तो उन्होंने खुर्शीद आलम के साथ-साथ आबिदा बेगम का खून क्यों किया ?

शटअप! तुम अपने विचार अपने पास ही रखो और जब तक मैं न पहुंचूं, तुम लोग वहीं रहो।
यस सर!

सम्बन्ध विच्छेद कर फोन रखने के बाद-
सुनो, तुम लोग बाहर छिपकर इस कमरे की निगरानी करो। ध्यान रहे, कोई भी तुम्हारी नजरों से छिपकर भीतर नहीं पहुंचना चाहिये।
यस सर! लेकिन सर, आप...

मैं मेजर आसिफ की कोठी जा रहा हूं। वहां इंस्पेक्टर खुर्शीद आलम और मेजर की पत्नी आबिदा बेगम का खून हो गया है।

फन्ने खां की बात सुनते ही सलमा के मुंह से दर्दभरी चीख निकल गई।
नहींSSS!

हाय! मेरी अम्मी को किस जालिम ने मार डाला ? खुदा उसे जहन्नुम दे। हू-हू-हू!

सुनो, कोठी के आसपास छिपे गुप्तचरों को गुप्त संकेत दे दो कि वे कोठी में प्रवेश करने वाले किसी भी व्यक्ति को रोकने-टोकने की कोशिश न करें। उसे आराम से भीतर दाखिल होने दिया जाये।

जी, बहुत अच्छा।

उस व्यक्ति के जाने के बाद–
तुम सब यहीं आसपास छिप जाओ। यदि मैं गलत नहीं सोच रहा तो आने वाला जरूर मेजर या राम-रहीम में से कोई एक होगा।
लेकिन जनाब, क्या आपने इस बात पर भी ध्यान दिया कि उन तीनों में से एक व्यक्ति ही कोठी में घुसने के लिये इतना बड़ा खतरा क्यों उठा रहा है?

हो सकता है, वह केवल टोह लेने के लिये ही आया हो और कोई खतरा न देखकर बाकी दोनों को भी बुला ले...
...खैर, तुम लोग अब समय नष्ट मत करो और छिप जाओ। उन तीनों में से एक भी पकड़ में आ गया तो बाकी दोनों को धर-दबोचने में हमें ज्यादा समय नहीं लगेगा।
यस सर!
और फन्ने खां सहित सभी उस कमरे के आसपास छिप गये।

तभी रात के गहरे अंधकार को चीरता हुआ उल्लू का स्वर उभरा।
हूं-कूं-कूं
वह उल्लू की आवाज कोठी की निगरानी करनेवाले जासूसों को संकेत था कि वे कोठी में प्रवेश करने वाले को आराम से प्रवेश करने दें।
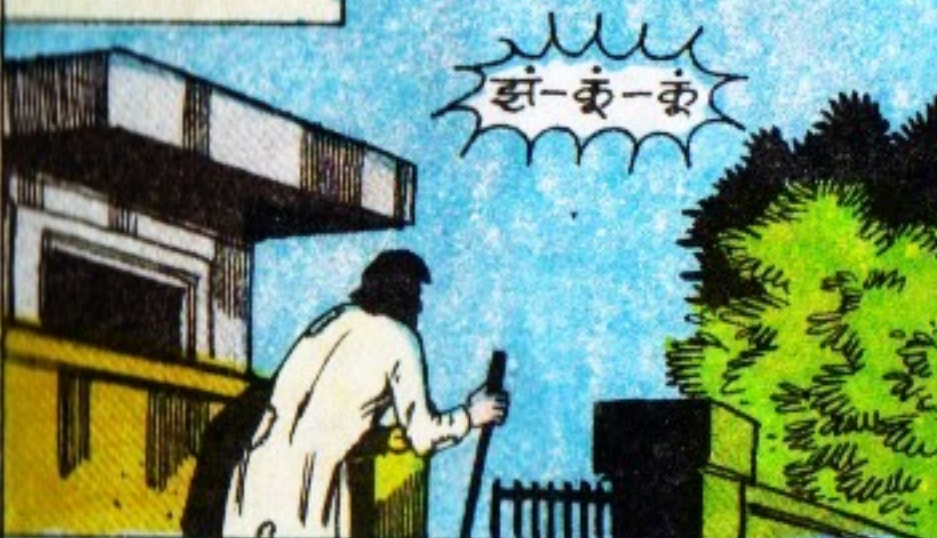
उस कोठी के इर्द-गिर्द चक्कर लगाने वाला भिखारी राम ही था।
आश्चर्य है! कोठी के भीतर और आस-पास छाई खामोशी को देखकर तो ऐसा नहीं लगता कि यहां की निगरानी की जा रही है। कहीं मैं गलत पते पर तो नहीं आ पहुंचा...

...लेकिन गेट पर लगी नेम प्लेट पर तो वही नाम और पता लिखा है, जो मेजर अंकल ने मुझे बताया था, फिर...

...दाल में कहीं काला जरूर है। खैर, जो होगा देखा जायेगा। मुझे सलमा बहन और आबिद की खैर-खबर लेने के लिए एक बार तो कोठी में घुसना ही होगा।

फिर कुछ और देर तक कोठी के आसपास की टोह लेने के पश्चात् राम छिपता-छिपाता कोठी के पिछवाड़े की चार दीवारी तक पहुंच गया।
यहां चारदीवारी कुछ नीची है, और मुझे इसे फलांगने में कोई परेशानी भी नहीं होगी।

लेकिन जैसे ही राम चारदीवारी पर चढ़ा, किसी उल्लू का कर्कश स्वर चारों ओर छाये सन्नाटे को भेद गया।
झं-कूं-कूं-कूं
ओफ्फ! इस मनहूस पक्षी को भी इसी समय शोर मचाना था!

शीघ्र ही राम चारदीवारी फांदकर भीतर लॉन में पहुंच गया।
एक कमरे को छोड़कर किसी में भी प्रकाश नहीं। शायद सलमा बहन उसी कमरे में होगी। परन्तु इतनी रात गये तक वे सोये क्यों नहीं?

लेकिन राम ने सोचने-विचारने में ज्यादा समय नहीं गंवाया और-

ईश्वर का शुक्र है, खिड़की भीतर से बंद नहीं है।

सलमा बहन!
कौन?

यह मैं हूं बहन, तुम्हारा भाई राम।

आहा! राम भइया!

राम को पहचानकर सलमा का चेहरा पल-भर के लिये तो चमका था, लेकिन फिर बुझ गया।

यह तुम लोगों को किसने बांधकर रख छोड़ा है बहन!

पुलिस के आदमियों ने भइया! पता नहीं वे हमसे अपना कौन-सा मकसद हल करना चाहते हैं।

क्या कहा? पुलिस के आदमियों ने?

हां, और वे कमरे के बाहर ही मौजूद हैं।

राम के मस्तिष्क में तुरन्त एक शब्द बिजली की तरह कौंधा—

खतरा!

लेकिन इससे पहले कि राम आने वाले खतरे से बचने का कोई उपाय सोचता-
हा-हा-हा! भागने की कोशिश बेकार है बच्चे राम! भलाई इसी में है कि तुम चुपचाप हाथ उठाकर खड़े हो जाओ।
ओह! आखिर इनके बिछाये जाल में फंस ही गया।

मजबूरी थी, राम ने चुपचाप हाथ उठा दिये।
नम्बर जीरो सेवन, इसकी तलाशीलो और इसकी नकली मूंछ-दाढ़ी भी खींच लो।
यस चीफ!

शीघ्र ही नम्बर जीरो सेवन ने राम की नकली मूंछ-दाढ़ी पकड़ कर खींच ली और उसके वस्त्रों से मिला सारा सामान अपने कब्ज़े में ले लिया।

हा-हा-हा! बहुत चालाक बनते थे। आखिर फंस ही गये न हमारे बिछाये जाल में!

मैं पूछता हूं कि आखिर यह सब क्या चक्कर है?

चक्कर सिर्फ इतना ही है कि हम इस छोकरे को पकड़ना चाहते थे और हमें विश्वास था कि कभी-न-कभी यह तुम लोगों से अवश्य मिलने आयेगा, और यह आया भी।

लेकिन आप लोग इसे क्यों पकड़ना चाहते थे? क्या बिगाड़ा है मेरे भइया ने आप लोगों का?
यह सबकुछ जानकर तुम्हें कोई फायदा नहीं पहुंचेगा बच्ची, क्योंकि कुछ ही पलों में तुम दोनों पति-पत्नी खुदा को प्यारे होने वाले हो...

...तुम दोनों अब हमारे किसी काम के नहीं रहे, इसलिये अब इस देश की पाक जमीं पर तुम लोगों का रहना बेकार है।

और कहने के साथ ही—
धांय-धांय-धांय
आह!
आई-ई-ई
उफ! नहींSSS!

अरे शैतान की औलाद, तुझे तो राम चाहिये था ना, फिर तूने इन मासूमों को क्यों मार डाला? क्या बिगाड़ा था इन्होंने तुम्हारा?
मैं सांप के बच्चों को जिन्दा रखने का आदी नहीं हूं छोकरे...
...यदि तुम भी मरना नहीं चाहते तो चुपचाप यह बता दो कि मेजर आसिफ और उसका लड़का कहां छिपे हैं?
ठीक है, तो सुनो।
कहने के साथ ही...
...राम ने अप्रत्याशित रूप से फन्ने खां पर छलांग लगा दी।
धड़ाक्
आह!

और इससे पहले कि किसी की समझ में कुछ आता, राम ने बिजली की सी तेजी के साथ कल्ले खां के हाथ से छूटा रिवॉल्वर उठाया और—

हाय!

धांय-धांय-धांय

आह!

उफ!

अब तू भी अपने खुदा को याद कर ले कुत्ते! मैं मारना तो तुझे कुत्ते की मौत चाहता था, लेकिन अफसोस, मेरे पास इतना वक्त नहीं। खैर, तेरी मौत के बारे में सुनकर मेजर अंकल और रहीम भइया के कलेजे में कुछ तो ठंडक पड़ ही जायेगी।

नहीं-नहीं, मुझे मत मारो...

और-
ले, अब जरा तू भी मौत का स्वाद चख।
धांय-धांय-धांय
आ... ई... ई...
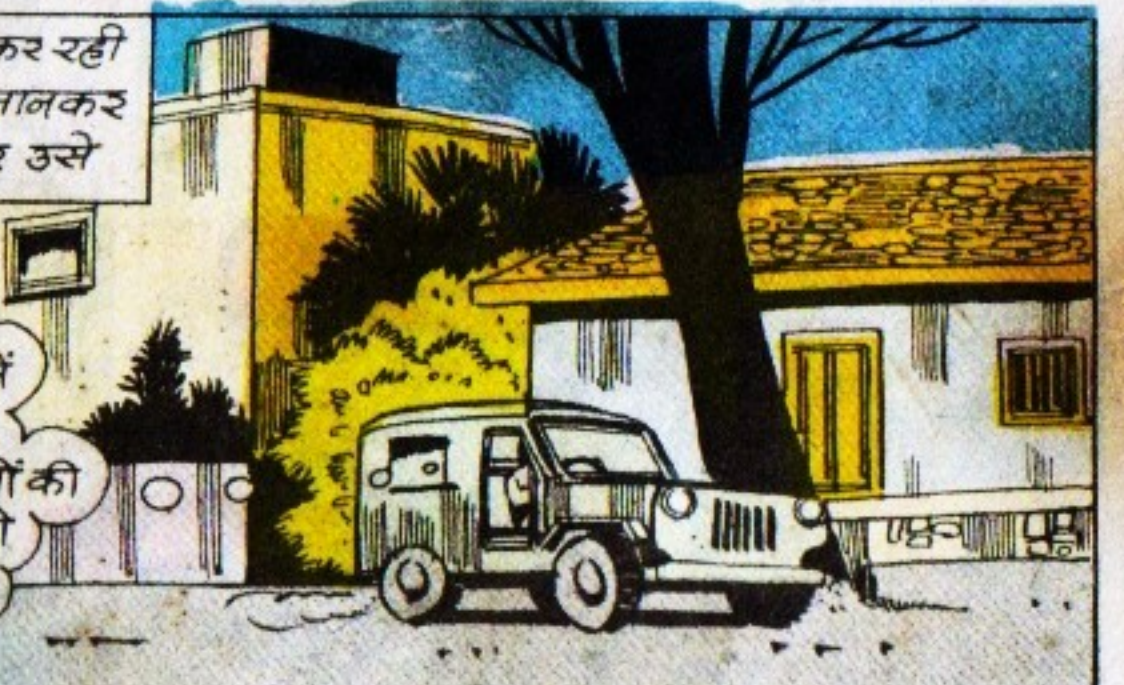
सौभाग्य से मार्ग में राम के साथ कोई घटना पेश नहीं आई और जब वह दरिया के किनारे पहुंचा तो उस समय भोर का उजाला फैलने लगा था।
पहले जीप को पूर्ववत् सुरक्षित स्थान पर छिपा दूं, फिर सुरंग में पहुंचूंगा।

जीप को यथावत् छिपाने के पश्चात् राम ने सुरंग के मुहाने के पास पहुंचकर अपने मुंह से विचित्र-सी आवाज निकाली।

शीघ्र ही सुरंग के मुहाने से घास-फूस हट गई।
आहा! तुम आ गये राम बेटे? क्या तुम्हें अपने मकसद में कामयाबी मिली?
भीतर चलिये अंकल! फिर सबकुछ बताऊंगा।

राम के भीतर पहुंचने पर मेजर आसिफ ने सुरंग का मुंह पहले की तरह घास-फूस से ढक दिया, फिर दोनों उस स्थान पर पहुंचे, जहां रहीम मौजूद था।
तुम आ गये राम भइया! अम्मी कहां हैं?
सॉरी रहीम भइया, मैं उन्हें व तुम्हारी दीदी और उनके पति को नहीं ला सका और अब तुम उन्हें कभी देख भी नहीं सकोगे।

क्या ???
आखिर तुम कहना क्या चाहते हो राम बेटे! अब हम उन्हें कभी नहीं देख सकेंगे कहने से तुम्हारा क्या तात्पर्य है?
मुझे बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है अंकल कि वे अब इस दुनिया में नहीं रहे। आपके देश के जालिम ऑफिसरों ने उन्हें कत्ल कर दिया।
नहींSSS!
ओह नहीं! यह नहीं हो सकता।
लेकिन यह सच है अंकल!
फिर राम ने उन्हें सारी आप बीती बता दी।
या खुदा, यह तुमने हमारे साथ कैसी बेइन्साफी की! क्या बिगाड़ा था उन्होंने किसी का, जो तूने उन्हें मौत की सजा देदी? ऊ-हू-हू-हू!
हिम्मत और धैर्य से काम लो रहीम! यदि हम लोगों ने हिम्मत हार दी तो वह क्षण दूर नहीं, जब हम भी मार दिये जायेंगे।

मैं हिम्मत से ही काम लूंगा राम भइया और इस देश की ईंट से ईंट बजा दूंगा। अपनी मां-बहन के कातिलों से बदला लूंगा।
जोश में होश नहीं खोते रहीम! फिर तुम्हारी अम्मी और आपा के कातिलों को तो मैं जहन्नुम पहुंचा ही चुका हूं, अतः अब तो सोचना यह है कि जल्द-से-जल्द कैसे इस देश से निकला जाये।

राम के काफी समझाने-बुझाने के पश्चात् मेजर आसिफ और रहीम कुछ शान्त हुए।
आप ठीक कहते हैं अंकल! फिर एक पूरी सरकार से टकराना भी तो कोई हंसी-मखौल नहीं। हमारी भलाई इसी में है कि किसी तरह इस देश से बाहर निकल जायें।
ठीक है राम बेटे। जैसा तुम कहोगे, हम वैसा ही करेंगे। वैसे भी अब इस देश में अपना रखा ही क्या है? जो अपने थे, वे सब तो हमेशा-हमेशा के लिये जुदा हो गये। रिश्ते-नातेदार भी इस स्थिति में हमारा साथ नहीं देने वाले।

लेकिन प्रश्न फिर वही पैदा होता है कि कैसे? इस देश से बाहर निकलने के सारे रास्ते अब तक तो हमारे लिये बंद किये जा चुके होंगे।
मेरे दिमाग में एक योजना है, लेकिन उसे कार्यान्वित करने के लिये हमें अपनी जान की बाजी लगानी होगी...

...उसके बाद या तो हमें मौत नसीब होगी या फिर विजय।
जीवन से भी अब हमें कोई मोह नहीं रह गया है राम भइया! तुम अपनी योजना बताओ।
रहीम ठीक कह रहा है राम!

तो सुनिये, यहां से लगभग बीस किलोमीटर के फासले पर एक आर्मी एयरपोर्ट है। हमें किसी तरह वहां से एक प्लेन उड़ाना है।
यह तुम कैसी मूर्खतापूर्ण बात कर रहे हो राम! भला वहां से प्लेन कैसे उड़ाया जा सकता है? जानते नहीं, वहां पास ही सैनिक छावनी भी है, जो उस एयरपोर्ट की सुरक्षा के लिये बनाई गई है।

मैं जानता हूं, लेकिन यहां आते समय मैं सब चैक करता हुआ आया था और सारी स्थिति का निरीक्षण करने के बाद ही मैंने अपनी योजना तैयार की है। आप मेरी योजना सुनिये तो सही।
ओह! ठीक है, तुम आगे कहो।

यह तो आप जानते ही हैं कि हमारी खोज शहर और आसपास के इलाकों के चप्पे-चप्पे पर हो रही होगी और इस देश से निकलने वाले तमाम आम मार्गों की नाकेबंदी भी की जा चुकी होगी...
...लेकिन यह कोई सोच भी नहीं पायेगा की हम इस देश से निकल भागने के लिये आर्मी एयरपोर्ट का रुख भी कर सकते हैं, इसलिये वहां की सुरक्षा की पहले जैसी ही व्यवस्था होगी। अब सुनिये मेरी योजना।
फिर राम उन्हें अपनी योजना बताने लगा।

जब राम अपनी योजना बताकर खामोश हुआ—
ठीक है राम! हम तुम्हारी ही योजना पर अमल करेंगे, फिर चाहे जो भी हो।
तो ठीक है। हम आज रात ही यह देश छोड़ने की कोशिश करेंगे।
फिर वे थोड़ा-बहुत खा-पीकर रात होने की प्रतिक्षा करने लगे।
और रात का अधंकार छाते ही तीनों अपने सामान के साथ जीप पर पहुंच गये। इस बार ड्राइविंग सीट रहीम ने संभाली और जीप को मेजर आसिफ के बताये एक कच्चे मार्ग पर दौड़ा दिया। वहां से आर्मी एयर-पोर्ट ज्यादा निकट पड़ता था।
रहीम, रनवे पर जो विमान खड़ा हो, तुम्हें जीप हर हालत में उस तक ले जानी है। मार्ग में जो बाधक बनेंगे, उनसे हम निपट लेंगे।
ठीक है, मैं समझ गया।
कुछ देर बाद वे जैसे ही आर्मी एयरपोर्ट के मुख्य द्वार पर पहुंचे और द्वार पर खड़े सैनिकों ने उन्हें रोकने की कोशिश की, राम और मेजर आसिफ अपनी योजना अनुसार तुरन्त हरकत में आ गये।
धड़ाम!
धांय-धांय-धांय
आह!
उफ!

रहीम बेरियर को तोड़ता हुआ जीप को भीतर लेता चला गया।
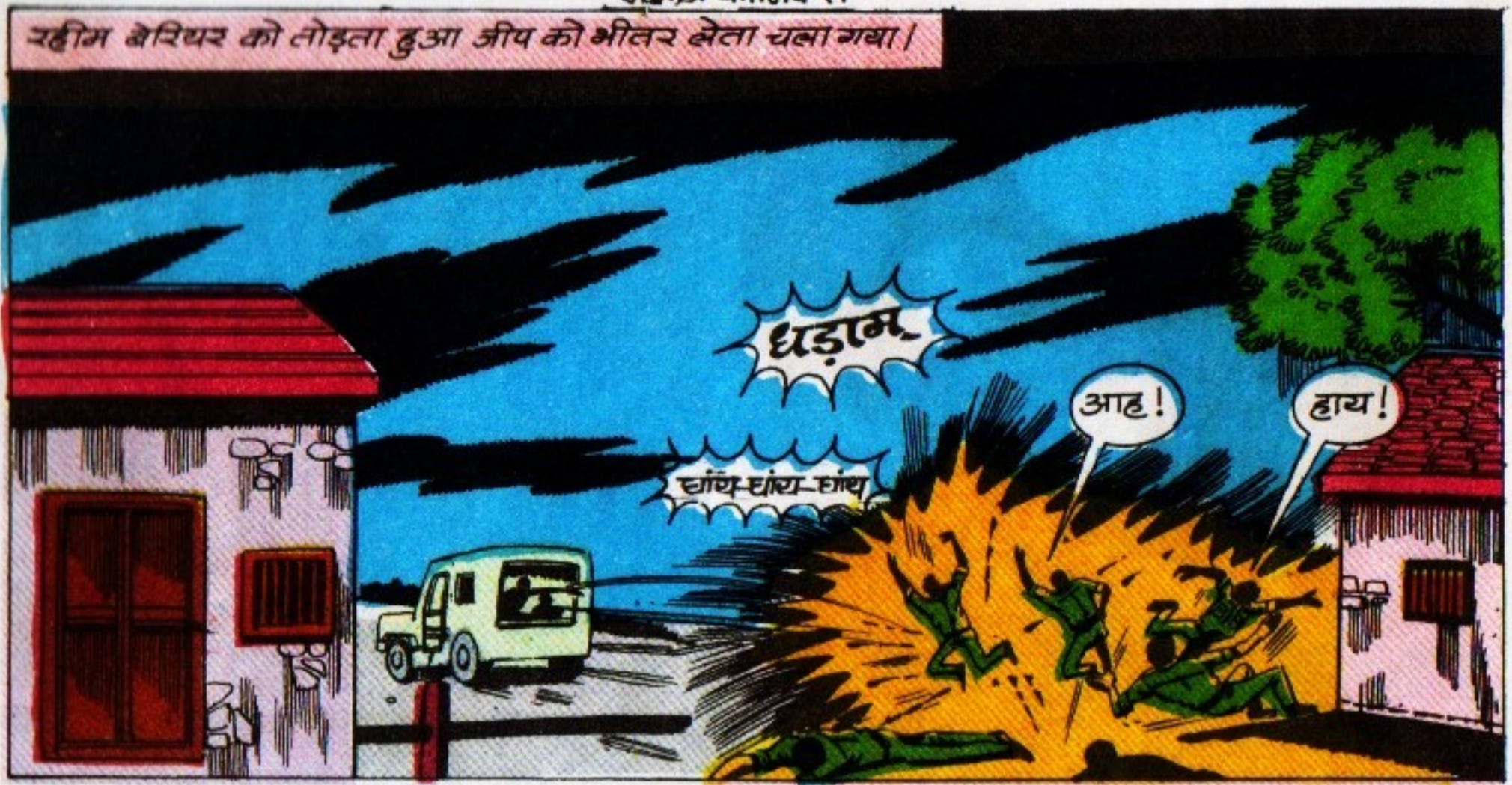
धड़ाम

धांय-धांय-धांय

आह!

हाय!

लेकिन उनका दुर्भाग्य ऐन मौके पर उनके सामने आ खड़ा हुआ। पता नहीं कहां से दो सशस्त्र सैनिक निकले और –
आई-ई-ई-
धांय-धांय-धांय
फायरिंग की आवाज और मेजर आसिफ की चीख सुनकर राम-रहीम बिजली की-सी फुर्ती के साथ पलटे और सारा माजरा समझते ही राम ने एक पल भी नहीं गंवाया।
धांय-धांय-धांय
उफ!
आह!
पलक झपकते ही दोनों सैनिकों की लाशें बिछ गई।
डैडी SSS!
रुक जाओ रहीम! यह भावनाओं में बहने का समय नहीं है।

फिर रहीम को न रुकते देख राम ने एक लम्बी छलांग लगाई और उसे पकड़ लिया।
छोड़ दो मुझे राम भइया! मुझे डैडी को देखने दो। शायद वे जिन्दा हों।
पागल न बनो रहीम! इतनी गोलियां खाने के बाद वे जिन्दा नहीं बच सकते...

...वह देखो, सैनिक आ पहुंचे हैं। यदि तुमने अपनी जिद नहीं छोड़ी तो हम भी मारे जायेंगे।

तुम अपनी जान बचाओ पत्थर-दिल दोस्त, लेकिन मैं अपने डैडी को इस अवस्था में छोड़कर हरगिज नहीं जा सकता। छोड़ दो मुझे।
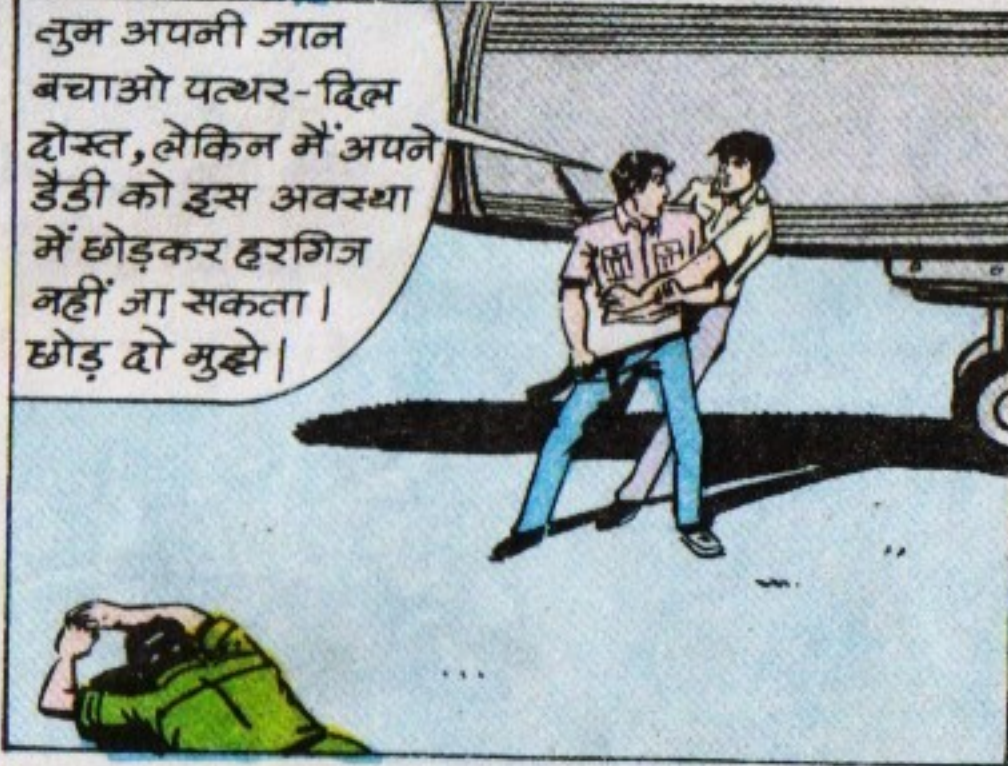
उफ! मौत पल-पल हमारे निकट होती जा रही है और यह अपनी जिद नहीं छोड़ रहा। अब तो दूसरा ही उपाय करना होगा।

खटाक्
माफ करना दोस्त, मजबूरी में मुझे गलत कदम उठना पड़ रहा है।
आह!

अगले ही पल राम ने बेहोश रहीम को कंधे पर डाला और पुनः विमान की ओर दौड़ पड़ा।
वह शायद विमान लेकर उड़ने की फिराक में है।
कोई चारा नहीं। फायर!

और-
धांय-धांय-धांय
धांय-धांय-धांय

लेकिन राम रहीम के साथ सकुशल विमान के कॉकपिट में पहुंच गया।

फिर राम ने विमान को स्टार्ट कर रनवे पर दौड़ाने में जरा भी विलम्ब नहीं किया।
धांय-धांय-धांय
धांय-धांय-धांय

यह राम का सौभाग्य ही था कि विमान क्षतिग्रस्त नहीं हुआ और शीघ्र ही उसने हवाई पट्टी छोड़ दी।
उफ! बच निकला! जल्दी से अन्य विमानों द्वारा पीछा करो। वह लड़ाकू विमान ले भागा है।
यस सर!

परन्तु इससे पहले कि वे अन्य विमानों की ओर बढ़ते, राम ने पहले से ही संभावित खतरे को भांपते हुए वहां कहर बरपा दिया।
घुड़म्
धड़ाम्
बचाओ!

राम ने उस हवाई अड्डे और निकट ही मौजूद सैनिक छावनी के कई चक्कर लगाये और दोनों स्थानों से आग का तूफान उठता दिखाई देने लगा।
धड़ाम्

अब उनके द्वारा पीछा किये जाने की कोई सम्भावना नहीं।मुझे अपने देश लौट चलना चाहिये।

जब कमाण्डर खान को फल्ले खां की मौत के साथ-साथ राम-रहीम के निकल भागने का समाचार मिला—
नहीं- नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। उनके भाग जाने का मतलब है मेरी मौत। मुझे आफिसर कुत्ते की मौत मार डालेंगे...

...उस मौत से अच्छा तो यही है कि मैं स्वयं ही आत्महत्या कर लूं।

अगले ही पल—
धांय!

इधर कुछ देर बाद राम का जहाज जैसे ही भारत की सीमा में प्रविष्ट हुआ।
हैलो-हैलो! तुम जो कोई भी हो, तुरन्त अपने यान को दाईं ओर स्थिति एयरपोर्ट पर उतारो, वरना तुम्हारे यान को नष्ट कर दिया जायेगा।
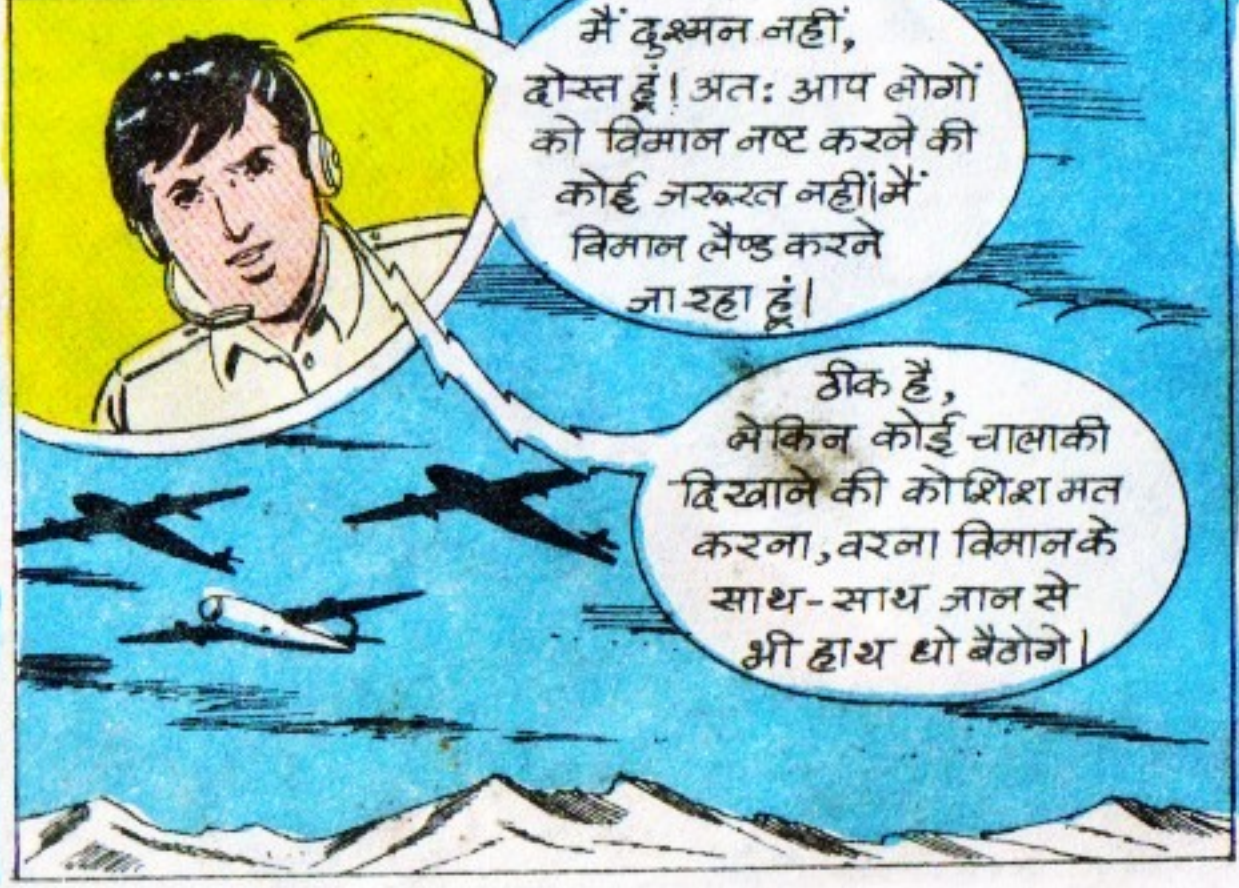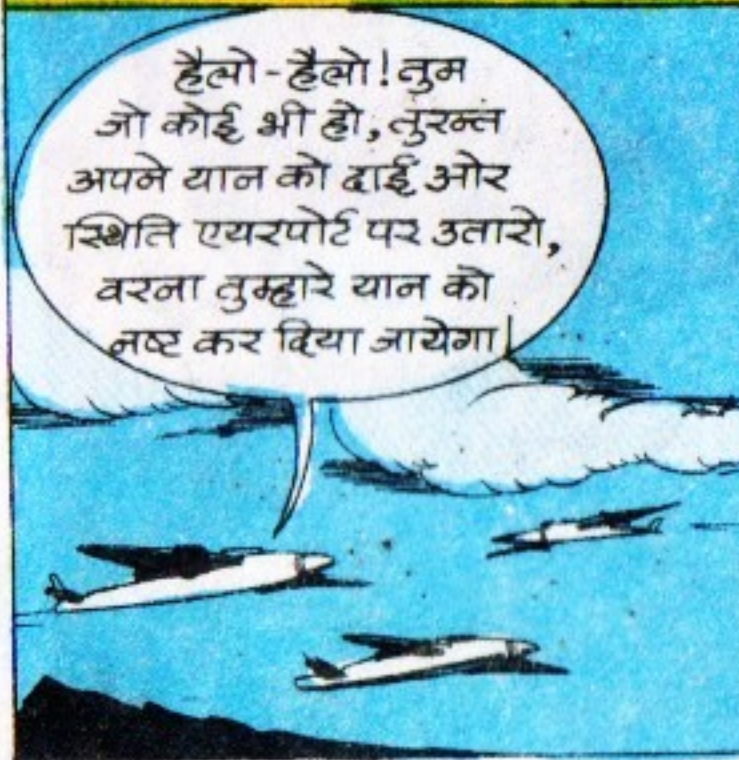
मैं दुश्मन नहीं, दोस्त हूं! अत: आप लोगों को विमान नष्ट करने की कोई जरूरत नहीं।मैं विमान लैण्ड करने जा रहा हूं।
ठीक है, लेकिन कोई चालाकी दिखाने की कोशिश मत करना, वरना विमान के साथ-साथ जान से भी हाथ धो बैठोगे।

शीघ्र ही राम ने बड़ी कुशलता के साथ अपने विमान को सीमा पर बनी एक छोटी-सी हवाई पट्टी पर उतार दिया।

बाहर आ जाओ।
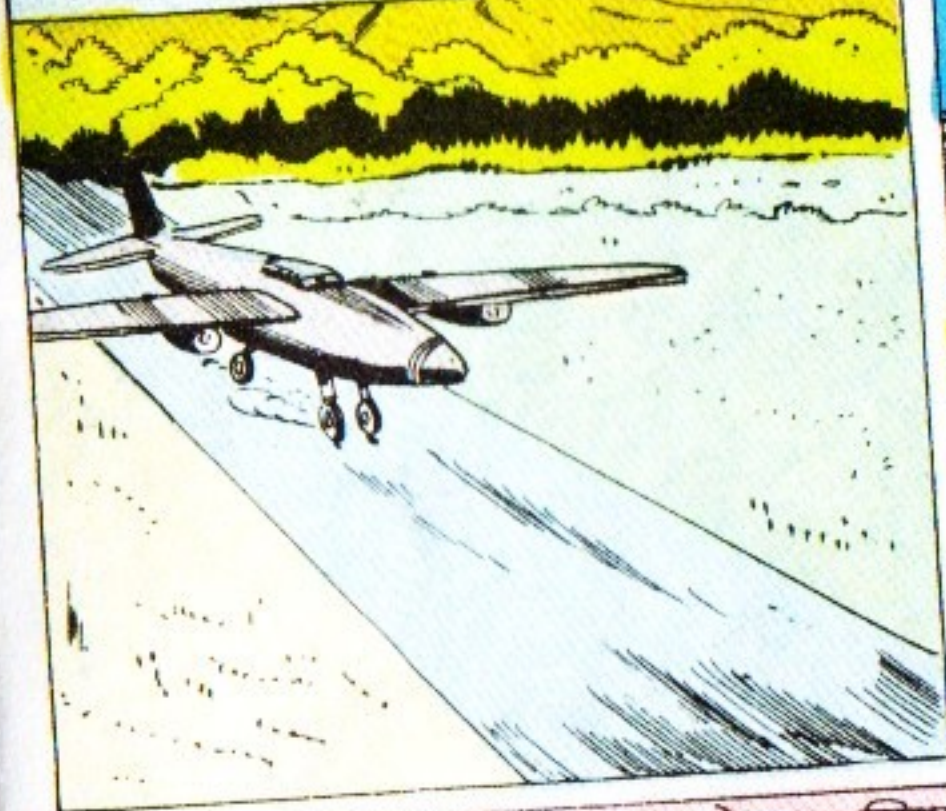
राम चुपचाप कॉकपिट का द्वार खोलकर विमान से नीचे उतर आया और एक बालक को पायलट के रूप में देखकर भारतीय सैनिक आश्चर्यचकित हो उठे।

कौन हो तुम और पाकिस्तानी विमान के साथ हमारी सीमा में आने की जुर्रत कैसे की?
मेरा नाम राम है और मैं कर्नल राघव का लड़का हूं। यदि मैं भूल नहीं कर रहा तो उनकी ड्यूटी इसी सीमा पर लगी है।

राम का परिचय जानकर सैनिक अधिकारी चौंक उठा।
क्या कहा? तुम कर्नल विशाल राघव के लड़के हो?
हां, यदि आपको विश्वास न हो रहा हो तो आप मुझे उनके पास ले चलिए। बाकी बातें मैं उन्हें ही बता दूंगा।

ठीक है! आओ हमारे साथ, लेकिन ध्यान रहे, किसी भी किस्म की चालाकी दिखाना तुम्हारे लिये हानिकारक होगा।
प्लीज सर, मेरा एक दोस्त भी विमान में है, जो बेहोश है। कृपया उसे भी उतारकर
ओह!
हवलदार रामसिंह, तुम और श्यामलाल उसे बाहर निकाल लो।
यस सर!

और शीघ्र ही वे लोग राम व बेहोश रहीम को लेकर सीमा के भीतर एक ओर बढ़े चले जा रहे थे।

यही थी सीमा पर बनी वह गुप्त प्रयोगशाला...

...जहां कर्नल राघव की देख-रेख में अद्भुत आविष्कार हो रहा था। एक ऐसी गैस का आविष्कार, जो अभेद दीवार की तरह काम करे। और आज वह आविष्कार पूरा हो चुका था। और यही वह आविष्कार था, जिसके बारे में जानने और उसके फॉर्मूले को पाने के लिये पाकिस्तानी हुकूमत की नींद हराम हो गई थी।
आप कहां तक पहुंचे प्रोफेसर भार्गव ?
गैस तैयार हो चुकी है कर्नल ! बस, परीक्षण करना बाकी है। वह भी मैं अभी आपके सामने कर डालता हूं।

गुड ! फिर आप जल्दी उसका परीक्षण कीजिये। मैं उस विचित्र गैस को देखने के लिये उत्सुक हूं।

प्रोफेसर भार्गव तुरन्त अपनी ईजाद की हुई मशीन के कलपुर्जों को इधर-उधर करने में जुट गये।
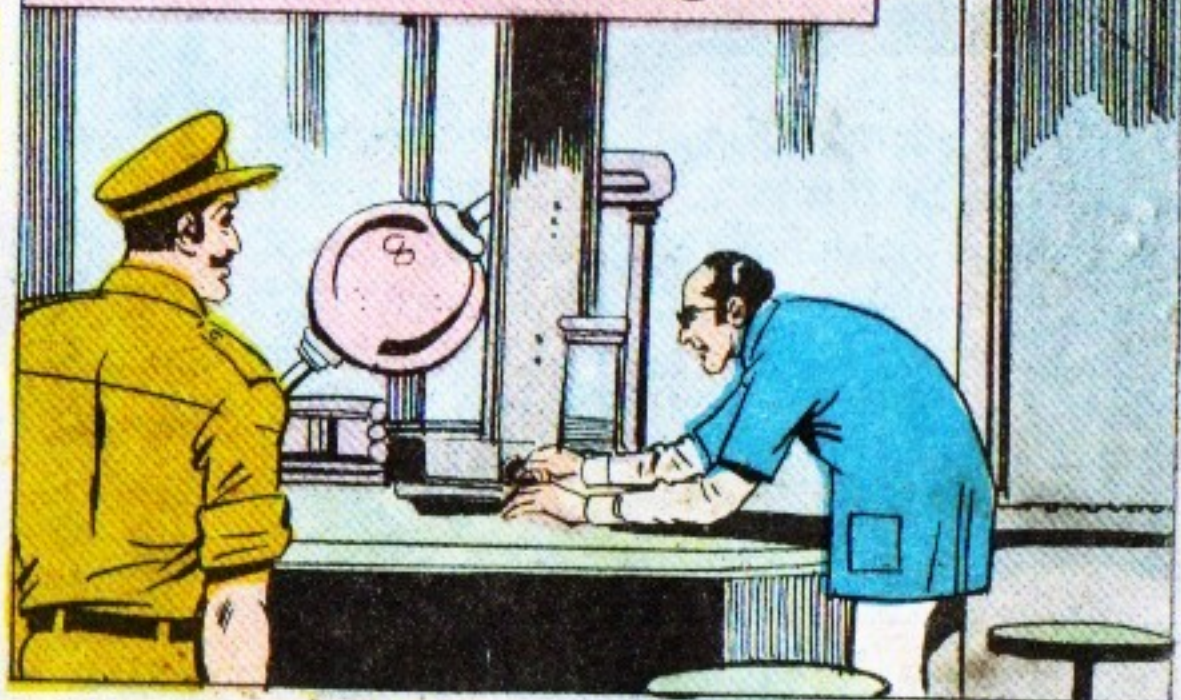
शीघ्र ही उस मशीन से एक गोल पाइप, जिसमें असंख्य छिद्र बने थे, निकलकर फर्श के समान्तर एक तरफ की दीवार की ओर बढ़ने लगा।

कुछ ही क्षणों में पाइप दीवार से जा सटा।
परीक्षण करने के लिये तैयार हो जाइये कर्नल! मैं गैस की दीवार खड़ी करने जा रहा हूं।
मैं तैयार हूं प्रोफेसर।

और प्रोफेसर द्वारा मशीन पर लगे एक बटन को दबाये जाते ही पाइप पर बने छिद्रों से तेजी के साथ एक चमकीली गैस निकलने लगी।
खट्
शूं-शूं-शूं
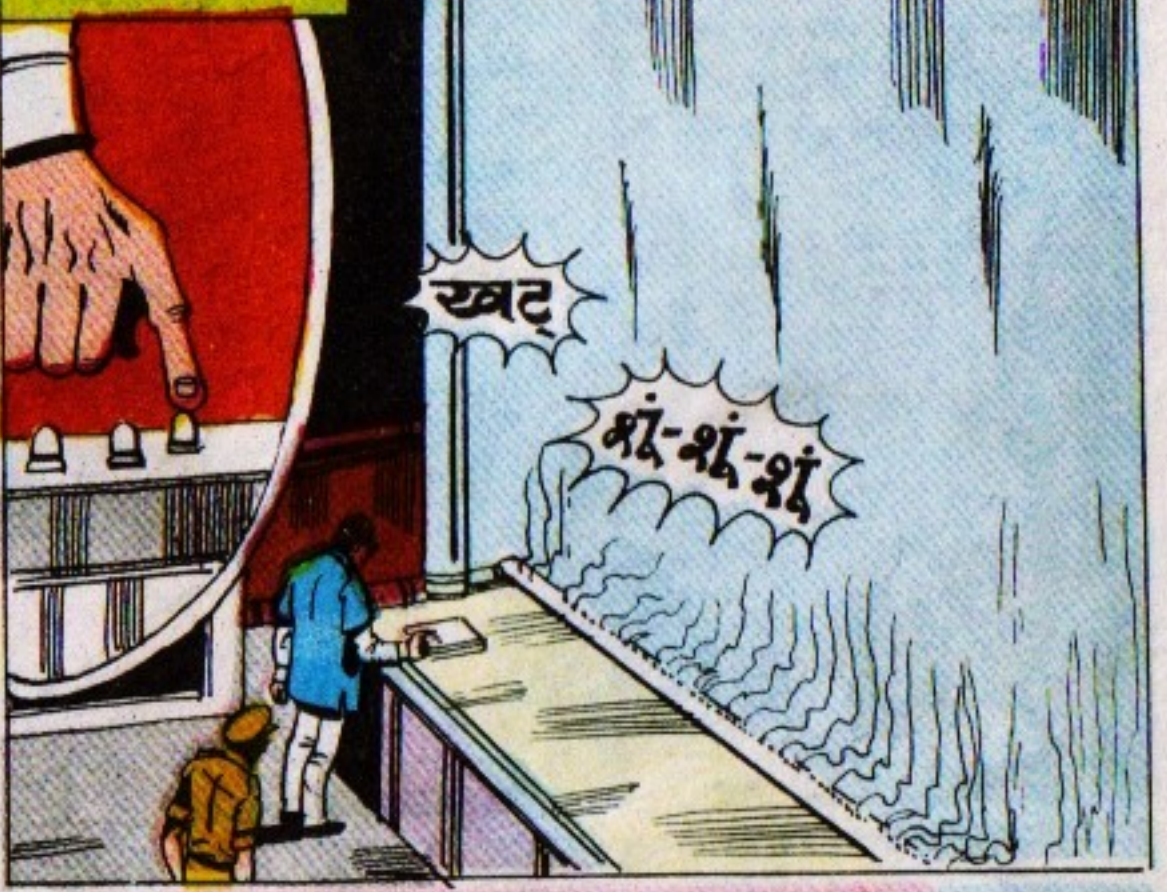
आश्चर्यजनक थी वह गैस। वह इधर-उधर पूरे कमरे में न फैलकर पाइप के जितनी ही चौड़ाई में किसी शीशे के समान छत की ओर उठ रही थी।
वंडरफुल

शीघ्र ही गैस की वह दीवार छत से आ लगी।
अब आप इस पर फायर कर सकते हैं कर्नल! यदि गोली इस दीवार से टकरा-कर बेकार हो जाती है तो समझ लीजिये, मेरा प्रयोग सफल रहा, वरना...।
मैं समझ गया प्रोफेसर! एक मिनट ठहरिये।

अगले ही पल-
धांय-धांय-धांय

कर्नल राघव ने एक के बाद एक कई फायर उस दीवार पर किये, लेकिन गोलियां उस अद्भुत दीवार से टकराकर फर्श पर गिर पड़ीं।
धांय
थैंक्स गॉड! मेरी मेहनत सफल हुई।

कर्नल राघव का चेहरा भी प्रसन्नता से खिल उठा।
मुबारक हो प्रोफेसर! आपका प्रयोग सफल रहा। निश्चय ही इस प्रयोग के बारे में पूरे देश को आप पर गर्व होगा।
और मुझे भी हमेशा अपने देश की उन्नति पर और उसकी सेवा करने में गर्व होगा।
अच्छा प्रोफेसर, एक बात बताइये, इस गैस पर सिर्फ गोलियों का ही असर नहीं होता या किन्हीं भी अस्त्रों-शस्त्रों का?
मुझे विश्वास है कि शक्तिशाली से शक्तिशाली बम या गोलों का भी इस पर कोई असर नहीं होगा। वैसे हम इसका परीक्षण भी जल्दी ही कर लेंगे।
गुड! तो मुझे इजाजत दीजिये। मैं जल्द-से-जल्द यह खुशखबरी अपने अधिकारियों को देना चाहता हूं।
ठीक है! तब तक मैं भी कुछ अधूरे काम पूरे कर लेता हूं।
लेकिन प्रोफेसर से विदा लेकर कर्नल राघव जैसे ही प्रयोगशाला से बाहर निकले-
सर, राम नाम के पन्द्रह-सोलह वर्ष के एक लड़के ने पाकिस्तानी लड़ाकू विमान के साथ अनधिकृत रूप से हमारी सीमा में प्रवेश किया है। वह अपने-आपको आपका लड़का बताता है। उसके साथ एक बेहोश लड़का भी है।
राम!
ओह! वे कहां हैं कैप्टन!
चौकी नम्बर ग्यारह में।

ठीक है। चलो, मैं चलता हूं।

और नम्बर ग्यारह पर पहुंचते ही—
आहा! डैडी!
राम, मेरे बच्चे!

गले मिलने के बाद—
बेटे, तुम बजाय घर पहुंचने के यहां कैसे पहुंच गये और वह पाकिस्तानी विमान... यह लड़का? यह सब क्या चक्कर है?
बहुत गहरा चक्कर है डैडी! बस, समझ लीजिये कि ईश्वर की कृपा और आपके आशीर्वाद से ही मैं इस समय आपके सामने जिन्दा खड़ा हूं।

फिर राम ने अपने पिता को सारी बात विस्तारपूर्वक बता दी। सबकुछ जान-सुनकर जहां कर्नल राघव को अपने बेटे के इस महान कारनामे पर बहुत प्रसन्नता हुई, वहां रहीम के माता-पिता और बहन की मौत पर गहरा दुःख भी हुआ।
तो यह रहीम है?
हां डैडी!

बेचारा अनाथ हो गया। ईश्वर इसे दुःख सहने की शक्ति दे।
इसे अनाथ मत कहिये डैडी! आज से मैं, आप और मम्मी ही इसके सब कुछ होंगे। मैं चाहता हूं कि आप रहीम को अपने दूसरे बेटे के रूप में अपनायें और गोद लें।

Megha Sinha

मुद्रक : अशोका आफसेट वर्क्स, दिल्ली